ब्रेख्त और एक उदास नगर

निर्मल वर्मा का यात्रा संस्मरण

राम प्रकाश द्विवेदी

ब्रेख्त और एक उदास नगर: निर्मल वर्मा का यात्रा संस्मरण

Site:	Virtual Learning Environment
Course:	अन्य गद्य विधाएं : यात्रा-संस्मरण,व्यंग्य लेख,संस्मरण
Book:	ब्रेख्त और एक उदास नगर: निर्मल वर्मा का यात्रा संस्मरण
Printed by:	Guest User
Date:	Sunday, 17 July 2016, 01:45 PM

Table of Contents

सामान्य परिचय

यात्रा-संस्मरण : एक अवलोकन

ब्रेख्त और एक उदास नगर : सामान्य परिचय

निर्मल वर्मा : जीवन परिचय

निर्मल वर्मा का रचना-संसार

निर्मल वर्मा का रचनात्मक वैशिष्ट्य

चीड़ों पर चाँदनी:निर्मल वर्मा की अनूठी गद्य कृति

ब्रेख्त और एक उदास नगर: भाषा और शिल्प

विवेचन

निष्कर्ष

अभ्यास प्रश्न

पहेली/प्रयोग

शब्दकोश

सन्दर्भ

नेट-संदर्भ

सामान्य परिचय

विषय : हिन्दी

अध्याय : ब्रेख्त और एक उदास नगर: निर्मल वर्मा का यात्रा संस्मरण

अध्याय लेखक : रामप्रकाश द्विवेदी

कॉलेज / विभाग : भीमराव अम्बेडकर कॉलेज (हिंदी विभाग), दिल्ली विश्वविद्यालय

यात्रा-संस्मरण : एक अवलोकन

Value addition : **Image**
Heading text रचना - चीड़ों पर चाँदनी
Body text: Image and/or text

हिंदी में यात्रा-वृतांत और संस्मरण दो महत्त्वपूर्ण विधाएँ हैं। ‘चीड़ों पर चाँदनी’ निर्मल वर्मा का यात्रा-संस्मरण है। इसे किसी एक विधा के अंतर्गत समाहित करना उचित न होगा। इस कृति में यात्रा और संस्मरण दोनों विधाओं के अवयव आए हुए हैं। हिंदी के प्रसिद्ध गद्य इतिहासकार डॉ० रामचन्द्र तिवारी ‘चीड़ों पर चाँदनी’ के संदर्भ में लिखते हैं कि ‘‘इसमें वस्तुओं और स्थितियों के अतिरिक्त अनेक यूरोपीय देशों की कलात्मक उपलब्धियों का जो आकलन किया गया है, वह विस्मयकारी है।‘

ब्रेख्त और एक उदास नगर : सामान्य परिचय

निर्मल जैसा मुक्त रचनाकार किसी विधा विशेष को तवज्जो भी नहीं देता, उसके लिये रचनात्मकता अधिक महत्त्वपूर्ण होती है। इसलिये यह स्वाभाविक भी था कि दो विधाओं का अंतर्संवाद उनकी कृति में हो। 'चीड़ों पर चाँदनी' में संस्मरण और यात्रावृत्त की सामासिक मौजूदगी है। वे एक सहज अंतर्प्रवाह के साथ आगे बढ़ते चलते हैं। 'चीड़ों पर चाँदनी' नामक कृति में निर्मल के यूरोप प्रवास का संवेदनशील विवरण मिलता है। उसमें इतिहास का दंश और स्मृति की मार्मिकता अपने सहअस्तित्व में उपस्थित हुए हैं। निर्मल न केवल मानवीय जगत के साथ अपना संवाद कायम करते हैं अपितु प्रकृति से भी एक जीवंत प्रतिश्रुति स्थापित करते हैं। 'ब्रेख्त और एक उदास नगर' चीड़ों पर चाँदनी का एक मार्मिक संस्मरण है जो धरती और मनुष्य के बीच नये रिश्ते की संभावना रचता है।मनुष्य अपने भूगोल से असंपृक्त नहीं हो सकता। यूरोप की धरती पर लड़ा गया विश्वयुद्ध वहाँ के नागरिकों की अनिवार्य नियति के रूप में भी प्रतिफलित होता है। 'ब्रेख्त और एक उदास नगर' रचयिता, रचना और परिवेश(भूगोल) के संश्लिष्ट संबंधों का आख्यान बन जाता है।

निर्मल वर्मा : जीवन परिचय

alue addition: Image
Heading text
Body text: Image and/or text

3 अप्रैल 1929 को शिमला में जन्में निर्मल वर्मा हिन्दी के आधुनिक लेखक,कथाकार और एक मूर्धन्य पत्रकार थे। उनका लेखन चिंतन प्रधान है। निर्मल वर्मा जी को 1995 में मूर्तिदेवी पुरस्कार, 1985 में साहित्य अकादमी पुरस्कार और उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान पुरस्कार और ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। 'परिंदे' (1958) से प्रसिद्धि पाने वाले निर्मल वर्मा की कहानियाँ नयी कहानी के अग्रणी रचनाकारों में से एक हैं। उनकी कहानियाँ संवेदना और शिल्प की दृष्टि से बेजोड़ समझी जाती हैं। उनके पिता श्री नंद कुमार वर्मा ब्रिटिश भारत सरकार के रक्षा विभाग में एक उच्च पदाधिकारी थे। आठ भाई बहनों में से पांचवें थे। उनकी कृतियों में पहाड़ी जीवन की छायाएं दूर तक महसूस की जा सकती हैं।

Value addition: Image
Heading text **सेंट स्टीफेंस कालेज(दिल्ली विश्वविद्यालय)**

सेंट स्टीफेंस कालेज(दिल्ली विश्वविद्यालय) में अध्यापन करते हुए वे इतिहास अनुशासन की गहराई से परिचित हो सके। वे इतिहास और स्मृति के बीच एक जरूरी बहस खड़ी करते हैं। निर्मल वर्मा 1959 में चेकोस्लोवाकिया पहुँचे और वहाँ के प्राच्य विद्या संस्थान में सात वर्ष तक अपनी सेवाएँ देते रहे, उसके बाद लंदन में रहते हुए टाइम्स आफ इंडिया के लिये सांस्कृतिक रिपोर्टिंग की। 1972 में उनकी भारत वापसी होती है और 1977 में वे आयोवा विश्वविद्यालय (अमरीका) के इंटरनेशनल राइटर्स प्रोग्राम में हिस्सेदारी के लिये पुन: विदेश जाते हैं। उनकी कहानी माया दर्पण पर मणि कौल ने फिल्म बनायी जिसे1973 का सर्वश्रेष्ठ हिन्दी फिल्म का पुरस्कार दिया गया।

Value addition: Image
Heading text **इंडियन इंस्टीटयूट आफ एडवांस स्टडीज़ (शिमला)**
Image

वे इंडियन इंस्टीटयूट आफ एडवांस स्टडीज़ (शिमला) के फेलो (1973) भी रहे और निराला सृजनपीठ(भोपाल) (1981-83) तथा यशपाल सृजनपीठ (शिमला, 1989) के अध्यक्ष रहे। 1988 में इंग्लैण्ड के प्रकाशक रीडर्स इंटरनेशनल द्वारा उनकी कहानियों का संग्रह द वर्ल्ड एल्सव्हेयर प्रकाशित किया गया। बीबीसी द्वारा उनके जीवन पर आधारित डाक्यूमेंट्री फिल्म प्रसारित की गयी। 25 अक्तूबर 2005 को दिल्ली में उनका निधन हो गया। हिंदी के अनूठे गद्यकार निर्मल वर्मा ने अपनी रचनाओं से हिंदी की जो सेवा की, वह अविस्मरणीय है।

आधुनिक काल के आगमन के साथ हिंदी गद्य का बहुआयामी विस्तार होता है। गद्य की अनेक विधाएँ एक विस्फोट की तरह अस्तित्व में आने लगती हैं। भारतेंदु और द्विवेदी युग हिंदी गद्य विधाओं के आविष्कारक युग कहे जा सकते हैं। जहाँ भारतेंदु युग में गद्य विधाओं का अंकुरण हो रहा था, वहीं वे द्विवेदी युग में आकर परिपक्व हो रही थीं। संस्मरण और यात्रा-साहित्य का सृजन भी सामान्यत: इन दोनों युगों में अपना आकार प्राप्त करता है। यात्रा-वृत्त में भौगोलिक परिवेश और उसकी प्रकृति का वर्णन सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण रहता है। संस्मरण में निजता का आग्रह अधिक होता है। संस्मरण की मार्मिकता और जीवंतता लेखक के निजी भावबोध का परिणाम है। अतीत वहाँ व्यतीत नहीं होता। 'चीड़ों पर चाँदनी' की भूमिका का आरंभ करते हुए निर्मल लिखते हैं कि, "अरसे बाद अपने इन स्मृति खंडों को दोबारा पढ़ते समय मुझे एक अजीब-सा सूनापन अनुभव होता रहा है-कुछ वैसा ही रीता अनुभव जब हम किसी जिंदा फड़फड़ाते पक्षी को क्षण भर पकड़कर छोड़ देते हैं-उसकी देह हमसे अलग हो जाती है लेकिन देर तक उसकी हथेलियों की धड़कन महसूस होती रहती है।"

'ब्रेख्त और एक उदास नगर' नामक संस्मरण भी यात्रा के समाप्त होने के बावजूद भी लेखक की स्मृति का अविभाज्य अंग बना हुआ है। बर्लिन शहर लेखक पहला पड़ाव है। अपने वृतांतों को लेखक बड़ी सूक्ष्म दृष्टि से गढ़ता है। वे जीवंत होते चलते हैं, मानो अपनी कथा खुद ही कह रहे हों और लेखक मात्र कलमकार भर हो। शहर, बस्तियाँ, नागरिक, वनस्पतियाँ और इतिहास जैसे एक दूसरे के बरक्स खड़े होकर आपस में बातचीत कर रहे हों और लेखक इनके आपसी संवादों को दर्ज करता जा रहा है। निर्मल वर्मा के यात्रा संस्मरणों की यह सबसे बड़ी विशेषता है, जो हिंदी के रचनाकारों में दुर्लभ है।

Value addition: **चित्र**

Heading text निर्मल वर्मा का साहित्य

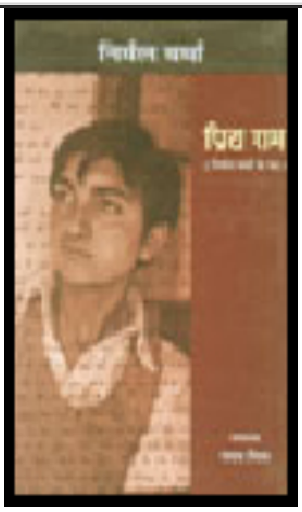

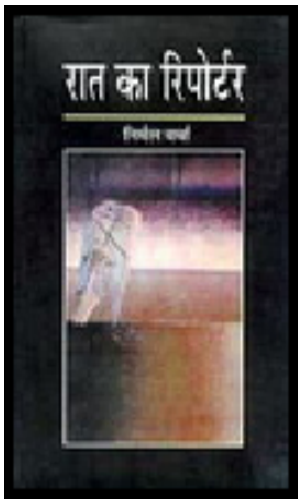

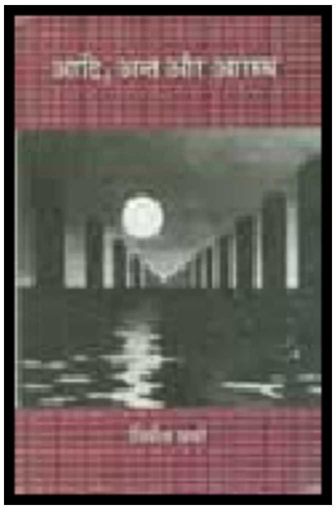

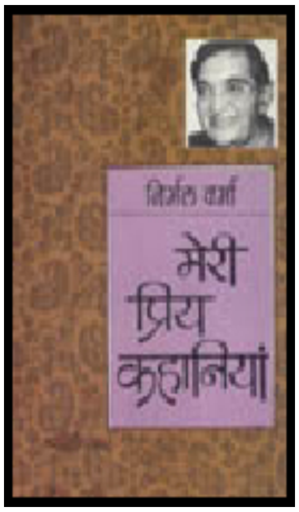

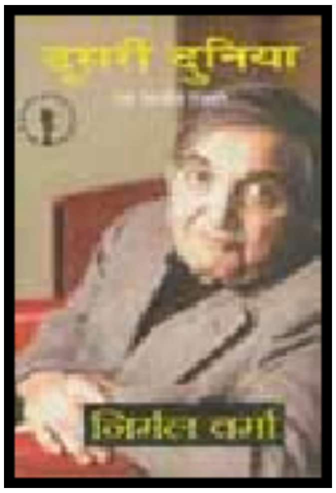

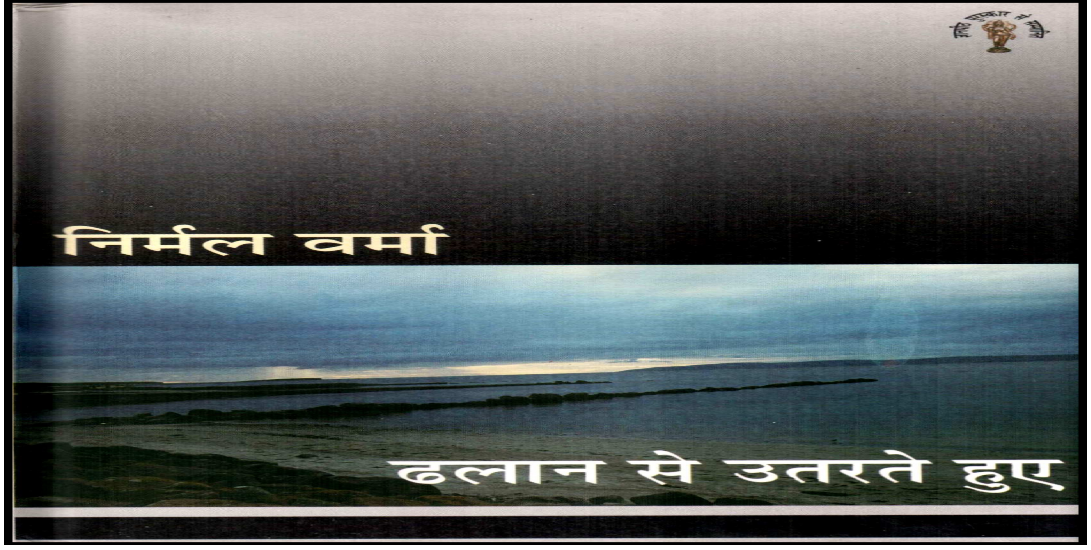

Source:

कहानियाँ:

- धागे, दहलीज, लवर्स, अंधेरे में, डेढ़ इंच ऊपर, अन्तर, लन्दन की एक रात, एक दिन का मेहमान, धूप का एक टुकड़ा, दूसरी दुनिया , कव्वे और काला पानी, आदमी और लड़की , सुबह की सैर, ज़िन्दगी यहाँ और वहाँ, बीच बहस में, जलती झाड़ी, परिन्दे, पिछली गर्मियों में, सूखा

उपन्यास

- लाल टीन की छत,एक चिथड़ा सुख,वे दिन, रात का रिपोर्टर, / अंतिम अरण्य

संस्मरण / यात्रा-वृत्तांत

- धुंध से उठती धुन ,चीड़ों पर चांदनी

नाटक

- तीन एकान्त / निर्मल वर्मा

-

आलोचना / निबन्ध

- भारत और यूरोप : प्रतिश्रुति के क्षेत्र,शब्द और स्मृति ,कला का जोखिम,ढलान से उतरते हुए, शताब्दी के ढलते वर्षों में

[Source: **gadyakosh.org**]

निर्मल वर्मा का रचनात्मक वैशिष्ट्य

आधुनिक हिंदी कहानी के सबसे प्रतिष्ठित लेखक निर्मल वर्मा की कहानी परिंदे को नयी कहानी की पहली कृति होने का श्रेय प्राप्त है। 1999 में साहित्य के शीर्ष सम्मान ज्ञानपीठ से भी उन्हें पुरस्कृत किया गया। वे अपने समय की तनावपूर्ण और अवसादग्रस्त परिस्थितयों को चित्रित करने में सिद्धहस्त थे। सामाजिक यथार्थ को चीन्हने का उनका तरीका बिल्कुल भिन्न था। अपने युग-प्रवाह को एक अलग नजरिये से देखते हुए, निर्मल वर्मा मानव सभ्यता के नये आयामों से हमें परिचित कराते हैं। वे इतिहास के बीच खड़े मनुष्य और उसकी आकांक्षा को परिभाषित करने का दुरुह कार्य अपनी रचनाशीलता के माध्यम से करते हैं। इतिहास और आकांक्षा के बीच झूलते मनुष्य की करुण-कथा उनकी कहानियों और उपन्यासों के ही केन्द्र में नहीं अपितु उनके संस्मरण साहित्य का भी अभिन्न अंग है। 'धुंध से उठती धुन' और 'चीड़ों पर चाँदनी' जैसी संस्मरणात्मक कृतियाँ इसका साक्ष्य उपस्थित करती हैं। निर्मल अपने यात्रा-संस्मरणों के सृजन में भाषा और संवेदना का नया तेवर प्रस्तुत करते हैं। निर्मल वर्मा का चिंतन और सृजन आधुनिक विश्व की जटिलताओं,पराभव और खण्डित मानवता का समाधान ढूंढने में निकलता है। उनकी सृजन-प्रक्रिया अपने समकालीन लेखकों से बिल्कुल जुदा है। इस भिन्नता का एक बड़ा कारण उनके चिंतन पर विश्व भर के अनेक दार्शनिकों,विचारकों का प्रभाव है तो दूसरी ओर यथार्थ और गैर-यथार्थ का अद्वैत। निर्मल की रचनाशीलता निर्जीव को सजीव करती चलती है। प्राण फूँकने की यह कला गद्यकारों में बड़ी दुर्लभ चीज़ है। हाँ कवियों में यह अवश्य देखी जाती है। इसीलिये निर्मल को गद्य-कवि की संज्ञा भी दी जाती रही है। उनके यहाँ ठोस का द्रवीकरण और मूर्त का अमूर्तन भी हुआ है यथार्थपरक घटनाओं,जीवन स्थितियों और नियतियों की वस्तुगतता को निर्मल ने लगातार प्रश्नांकित किया है। 'दृश्य' के पीछे का 'अदृश्य' उनके लिए अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है। मनुष्य और उसका परिवेश उनकी रचनाओं में एक पूरक भूमिका में उनके यहाँ उपस्थित हैं।

निर्मल वर्मा का वर्तमान अपने अतीत से इतना आबद्ध है कि कई बार उसकी लौ दीप्त होकर वर्तमान के अस्तित्व को ही खतरे में डाल देती है, इसीलिए समकालीन समस्याओं के समाधान उनके यहाँ तात्कालिक विश्लेषण में नहीं मिलते वरन् वह भूत और वर्तमान के सघन-संवाद की प्रक्रिया में साकार होते हैं। वर्तमान और आधुनिकता का चक्रव्यूह निर्मल को घेरता है। इसे भंजित करने के उपक्रम में निर्मल अपने मिथक (अतीत अनुभव संपदा) , स्मृति और परंपरा में प्रवेश करके कुछ युक्तियाँ ढूंढते हैं,'आधुनिकता के आतंक' से भिड़ने की नयी बिल्कुल अनूठी कार्य पद्धति प्रस्तावित करते हैं। ये युक्तियाँ किसी 'सोशल एक्टिविस्ट' की न होकर एक चिंतक-विचारक की अधिक होती है, इसीलिए इन पर 'ठोस' भरोसा कम होता है। उनके आलोचकों ने इसीलिए उन पर 'दार्शनिक-लेखक','संत-सर्जक' होने का आरोप लगाया है, यदि इसे आरोप कहा जा सके तो दरअसल निर्मल का रचनात्मक कर्म समाज के विभिन्न वर्गो की जवाबदेहियाँ तय करता है, वह किसी आन्दोलन का घोषणा-पत्र बनने से इंकार करता है।

मनुष्य के आचरण और आंतरिक प्रकृति का विभाजन आधुनिकता के साथ-साथ अधिक तीव्र और घनीभूत हुआ है। आचरण को नियंत्रित करने के लिए राजनैतिक,सामाजिक संस्थाएँ हैं, न्यायपालिका और दण्ड तथा पुरस्कार जैसी अनेक प्रविधियाँ हैं। निर्मल का मानना है कि वास्तव में यह सब एक तरह का 'कृत्रिम प्रबंधन' है जो क्षणिक एवं क्षणभंगुर है, इससे मानव सभ्यता पर कोई सुदीर्घ प्रभाव नहीं पड़नेवाला। इस तरह की प्रक्रिया एक अस्थायी समाधान देती है। निर्मल इसीलिए आधुनिक युग, जिसका समस्त संचालन संस्थाओं के द्वारा होता है-कि कार्य प्रणाली को संदिग्ध दृष्टि से देखते हैं। वे संस्थाओं के बजाय व्यक्ति की ईमानदारी,जवाबदेही और उसकी प्रकृति पर अधिक भरोसा व्यक्त करते हैं।

वास्तव में देखें तो, समकालीन मानव-जीवन प्रगति के जिस पथ पर अग्रसर है, वह अधिक विषमतामूलक और करुणाहीन

है। इसमें लोभ और तृष्णा का विस्फोट दिखाई देता है सभ्यता का यह क्षण अनेक अंतर्विरोधों,विघटनों और आत्म-विगलन से ग्रसित है। मनुष्य के भीतर का मरूस्थल लगातार विस्तार पाता चला गया है। शोषणभरी ताकतें मानवीयता के नकली मुखौटों में अवतरित हो रही है। सत्य और असत्य की पहचान इतनी धुंधली पड़ गई है कि उनके अंतर को जानने के 'टूल' अपर्याप्त हो चुके हैं। यह समूची प्रगति एक छलना भर है, वह विचार कोरा मानसिक न होकर सामाजिक हकीकतों से ही पैदा हुआ है। अपने परिवेश की नब्ज जैसे धड़कती है, उसे ठीक-ठाक पहचानना आसान नहीं होता। निर्मल वर्मा अपने युग-दंश की यातना और भयावहता को पहचानकर उसके निराकरण में निकले हुए रचनाकार हैं। उनकी इस यात्रा में विश्व-चिंतन का उनका साथ देता है। भले ही वह आधुनिक सांगठनिक संरचनाओं के महत्त्व को नकारने जैसा लगे। मार्क्सवादी विचारकों ने भी एक समय में राज्य, शासन और सत्ता की उपस्थिति को नकार दिया है। निर्मल मानव-मुक्ति के समाधान को अधिक जटिलता से उभारने का प्रयत्न करते हैं, जिससे वस्तुगतता बाधित हो जाती है। कई बार तो वह स्वत: स्फूर्त-प्रक्रिया से नव-समाज निर्माण का स्वप्न रचती है। यही स्थितियाँ एक-दूसरे से घर्षित नहीं होती, वरन वे वहाँ प्रकट और लुप्त होती जाती है। जहाँ वे एक-दूसरे के विरोध में खड़ी होती है, वहाँ भी उनका तनाव बैरपूर्ण न होकर अपनी-अपनी नियति का होता है। समाज की बैरपूर्ण और तनावकारी स्थितियाँ भी इसीलिए निर्मल के लेखक को विचलित, अश्लील और उद्दण्ड नहीं बनाती, बल्कि वे ऐसे माहौल को तलाशने में जुट जाती हैं, जो इनको ज्यादा सकारात्मक,आशान्वित और संयमित करती है। निर्मल का रचनात्मक लेखन और चिंतनात्मक कर्म इसी दिशा में अग्रसर होते हैं- सीमाओं और संभावनाओं को एक साथ समेटे हुए।

निर्मल वर्मा को आज जो ख्याति प्राप्त हुई है, वह बहुसंख्य बुद्धिजीवी एक अन्यतम साहित्य एवं अनूठा विषय स्वरूप को लेकर यों स्पष्ट रुप से कहा सकते हैं कि उनकी ख्याति कथा साहित्यकार के रुप में अधिक हुई हैं। निर्मल खुद स्वीकार करते हैं कि 'लेखक का व्यक्तिगत विश्वास एवं विचारधारा कृति के अलावा कहीं और खोजना लेखक के लिए तो अन्याय होगी ही, खुद आलोचक के लिए भी।' अक्सर निर्मल पर यह आरोप लगते रहे हैं कि 'निर्मल स्वदेश लौटकर भी विदेश में है', दरअसल निर्मल वर्मा के साहित्य को कहानी,उपन्यास,संस्मरण के आधार पर यह विवेचन किया जाता है। कथा साहित्य में भारतीय परिवेश की स्थिति,एवं मानवीय प्रकृति का सामंजस्य इतनी सूक्ष्मता से हुआ है कि वह एक खास वर्ग, खास परिवेश से अलग दिखाई देता है। जबकि स्थिति इसके ठीक विपरीत है, स्थितियों एवं परिवेश का वर्णन इतनी सूक्ष्मता से यहाँ हुआ है कि लगता है, निर्मल का पात्र भारतीय परिवेश का पात्र होते हुए, पूरे विश्व परिदृश्य का पात्र बन जाता है। चूंकि यह सब दिखाता इसलिए नहीं है, क्योंकि लेखक खुद यह मानता है कि 'कला की आलोचना कितनी भी सूक्ष्मता से की जाए, तब भी वह आलोचक के लिए एक रहस्य बचा हुआ रहेगा, जहाँ उसे और रहस्य की जिज्ञासा बनाए रखेगा। इस तरह हम देखते हैं कि कालजयी कृतियों का आलोचक द्वारा कितना भी प्रयास जानने-समझने का होता हो, लेकिन नया विमर्श उसमें झलक मारता ही है।

निर्मल वर्मा के चिंतन के केंद्र में उत्तर-औपनिवेशिक समाज में उपजी समस्याएँ एवं चिंताएँ है। वैश्वीकरण में विदेशी कंपनियां आज महानगरों में अपना विस्तार कर रही है। इन कंपनियों में एक तरफ ऊँचे ओहदे को अधिक धन व सम्मान मुहैया करवाया जाता है और मजदूर को उतनी ही जिल्लत सहनी पड़ती है। एक तरफ अमीर और अमीर होते जा रहे हैं, और गरीब दरिद्र होते जा रहे हैं लेकिन दोनों में समानता यह है कि सुखी कोई नहीं है। अमीर पैसे कमाने के फेर में चंचल एवं अशांत हैं, जबकि गरीब अपनी भूख शांत करने में। हमारे महानायक औपनिवेशिक समय में भारतीय समाज की मुक्ति बाहर के दुश्मनों से छुटकारा पाने में खोजते थे। वह चाहे गाँधी जी की आँखों में विदेशी सत्ता हो या प्रेमचन्द की आँखों में समाज की कुरीतियाँ और अंधविश्वास हों। आशा यह थी कि एक बार इनसे छुटकारा पाने के बाद हम दैन्य और दरिद्रता के आँसू भारतीय चेहरे से पोंछ सकेंगे। लेकिन हुआ क्या? ढाक के वही तीन पात', प्रगति एवं विकास के नाम पर गरीबों पर अत्याचार, भुखमरी, बेरोजगारी, प्रकृति का सर्वनाश, महानगरों में चोरी, डकैती, बलात्कार जैसी घटनाएँ उपहार में मिलीं। दरअसल ये घटनाएँ मानवीय असमानता का परिणाम है। गाँव और शहर में यही अंतर है। असमानता जहाँ अधिक होगी, घटनाएँ भी वहाँ ज्यादा होंगी। शहर

असमानता का केंद्र है, इसलिए यहाँ क्राइम अधिक है और गाँव में असमानता कम है, इसलिए वहाँ इस तरह की घटनाएँ कम होती है। निर्मल वर्मा इन घटनाओं को सिर्फ जीवन के बाह्य स्त्रोतों से न जोड़ते हुए मानवीय प्रकृति को केंद्र में रखते हैं। वे सामाजिक व्यवस्था पर विरोध जताते हुए चिंता जाहिर करते हैं कि यह कैसा विकास का मॉडल है, जिसमें गरीबी और अमीरी के बीच की दूरी को घटाया नहीं बढ़ाया है। इसीलिए महात्मा गाँधी और उनके विचारों का गहरा प्रभाव निर्मल के चिंतन और रचनाकर्म पर दिखाई पड़ता है। जिस समय वे तिकड़म और प्रपंच से अपने पात्रों को घिरा पाते हैं, तब गांधी के विचारों में निर्मल की इतनी गहरी आस्था है कि वे अक्सर अपने निष्कर्षों को निकालने में उनका अस्त्र की तरह प्रयोग करते हैं।

चीड़ों पर चाँदनी:निर्मल वर्मा की अनूठी गद्य कृति

निर्मल वर्मा की प्रसिद्ध कृति ‘चीड़ों पर चाँदनी’ तीन भागों-उत्तरी रोशनियों की ओर,चीड़ों पर चाँदनी और देहरी के बाहर- में विभक्त है। यह कृति मूलत: यात्रा-संस्मरण है। इस रचना के पहले भाग का पहला ही संस्मरण है ब्रेख्त और एक उदास नगर’। लेखक प्राग (चेक गणराज्य की राजधानी) से आइसलैंड की यात्रा के लिए निकला है। बीच का पड़ाव है बर्लिन पहुँचने पर उसे पीछे छूटता हुआ प्राग,यात्रा का लक्ष्य आइसलैंड एक-दूसरे से टकराते हुए नजर आते हैं। यह स्मृति और कल्पना की टकराहट जैसा है। लेकिन वर्तमान भी कम आकर्षक नहीं बर्लिन शहर उसके पूर्वज ब्रेख्त। दरअसल लेखक ने यहाँ शहर और व्यक्ति की अंतरंगता को उकेरा है। लेखक शहर के भीतर पैदा हुए व्यक्ति के मनोविज्ञान द्वारा उस शहर के जीवन चक्र को पहचानने की कोशिश करता है। निर्मल वर्मा जैसे शिमला के द्वारा गढ़े गए उसी तरह बर्लिन ने ब्रेख्त को रचा था। भूगोल और मनुष्य के जटिल, मार्मिक, रागात्मक और संवेदनशील संबंधों की मार्मिक कथा ही यात्रा-संस्मरणों में अत्यंत मुखर हुई है, जिसकी साफ-साफ अनुगूँज ‘ब्रेख्त और एक उदास नगर’ (बर्लिन शहर) के रूप में दिखाई देता है।

इस पाठ की शुरुआत में प्राग शहर और उसकी स्मृतियाँ आती है। लेखक के लिए यह स्मृतियाँ धुंधलेरूप में ही प्रकट होती हैं क्योंकि उस दिन उसने बीयर कुछ ज्यादा ही पी ली थी। निर्मल वर्मा का बीयर-पान वर्जनाओं से मुक्ति का उपाय है, जहाँ लेखक विस्तार से और आत्म-प्रसाद से घटनाओं को देखने के लिए सक्रिय हो उठता है। प्राग के बाहर आइसलैंड की मात्रा रचनाकार के लिए अत्यंत रोचक, कल्पनायुक्त हो उठता है। निर्मल वर्मा लिखते हैं- ‘‘मेरे लिए आइसलैंड की यात्रा’ आउटर स्पेस को छूने से कम चमत्कार पूर्ण नहीं थी’’ आइसलैंड पहुँचने के पूर्व ही रचनाकार अपने मन में उसकी एक छवि निर्मित कर लेता है। इस यात्रा में उनके आइसलैंड के ही मित्र योर्णिचर भी साथ है। दोनों का ही पहला पड़ाव बर्लिन शहर है। 1969 ई० की गर्मियों का दिन। विश्वयुद्ध की निशानियाँ बर्लिन शहर के चेहरे पर अभी भी साफ-साफ देखी जा सकती है।

दरअसल निर्मल वर्मा ‘अतीत के वर्तमान’ के रचनाकार है। पूर्वज और इतिहास उनके वर्तमान में सजीव हो उठते हैं। स्मृति को निर्मल विस्मृति में नहीं बदलते। इसलिए विश्वयुद्ध और बर्लिन शहर पर उसकी छाया को लेखक स्पष्ट देख पाता है। निर्मल की रचनाशीलता में सघन अवलोकन एक महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। बारीकी से देखना निर्मल की अपनी विशेषता रही है। इसी क्रम में वे अपनी दबी इच्छाओं को भी पहचान लेते हैं। बर्लिन पहुँचने पर निर्मल ने लिखा- ‘‘मेरी एक पुरानी दबी साध थी, बर्लिन एन्सेम्बल में ब्रेख्त को नाटक देखने की’’।लेखक दोनों के नाते। व्यक्ति के तौर पर ब्रेख्त ने नात्सी सता का प्रतिवाद किया और लेखक ने अपनी शैली और रचना-धर्मिता का आविष्कार किया। निर्मल ने उनके नाटकों के बारे में लिखा कि ‘‘नाटक की समस्त मान-मर्यादाओं को तोड़कर-उसे बीसवीं सदी के विशिष्ट प्रतीक के रूप में- सर्वथा नया मोड़ देने वाला यह जर्मन लेखक एक फासिस्ट विरोधी कम्युनिस्ट भी हो सकता है, पश्चिम के आलोचकों के लिए यह हमेशा एक विवादास्पद विषय बना रहा है। पश्चिम के साहित्यकार ब्रेख्त के महान् कृतित्व को स्वीकार करते है उनके कम्युनिस्ट व्यक्तित्व को नहीं। पूर्वी दिशा के आलोचक उनके कम्युनिस्ट व्यक्तित्व की सराहना करते हैं, किंतु उनके कृतित्व के संबंध में, शायद, पूरी तरह से आश्वस्त नहीं।’’ ब्रेख्त के व्यक्तित्व और कृतित्व पर निर्मल एक सटीक टिप्पणी करते हैं और व्यक्ति तथा रचनाकार दोनों रूपों में उनकी ताकत का एहसास कराते हैं।

निर्मल वर्मा बहुपठित रचनाकार हैं। दुनिया के अनेक लेखकों-चिंतकों का व्यापक असर उन पर हुआ है, अपनी इस रुचि के चलते उनकी रचनाओं में दृष्टांतों की बड़ी संपन्न दुनिया बनाती है। ब्रेख्त जैसे महान रचनाकार के प्रति बनी विश्व की खंडित समझ को निर्मल संपूर्ण बनाते हैं। निर्मल की वृतांत शैली चीड़ों पर चाँदनी में निखर उठती है। शहर, थिएटर,समाज,व्यक्ति, अतीत,वर्तमान की जैसे सजीव रील-सी घूमने लगती है। सूक्ष्म पर्यवेक्षण न केवल भूगोल का वरन् इतिहास का भी निर्मल के

यात्रा-वृतांतों को टाइम और स्पेस के आयामों में विस्तृत कर देते हैं। निर्मल ब्रेख्त की नाटकीय क्षमता और जीवन-बोध के बारे में लिखते हुए कहते हैं- “नाटक ही तो है... ब्रेख्त के लिए महज एक काफी नहीं हैं। वे इससे आगे जाते हैं। नाटक मंच पर खेलने के चीज़ नहीं,वह जीने की सक्रिय कला है, हर परिचित, पुरानी चीज को नए सिरे से छूने की अपेक्षा है, ताकि हम उसे आज का, इस क्षण का धड़कता सत्य दे सकें।” पुराने को नया करते रहने और प्राचीन के बीच सघन संवाद ब्रेख्त के नाटकों का महान योगदान है। निर्मल की अपनी जीवन दृष्टि का केन्द्र भी यही है। ‘टेरर ऐण्ड मिज़री’ को देखते हुए निर्मल को ‘समकालीन’ शब्द का अर्थ प्राप्त होता है। निर्मल वर्मा कैसे शब्द और अर्थ की खोज में अपनी समस्त ऊर्जा लगाते चलते हैं, इसे यहाँ सहज ही जाना जा सकता है। ब्रेख्त ने अपनी विचार-सरणि अपने समकालीन दबावों से निर्मित की थी। उनका कम्यूनिस्ट मन उसके समक्ष घटित घटनाओं के आलोक में प्रतिरोध रचता है। कला और जीवन या जीवन-कला उनके लिए एक जैसे थे। निर्मल के मानस-बिंब में ब्रेख्त का व्यक्तित्व स्थायी रुप से अंकित हो उठा था। बर्लिन की यह यात्रा इस रुप में बड़ी अर्थवान थी।

ब्रेख्त और एक उदास नगर: भाषा और शिल्प

बर्लिन से बाहर निकल कर निर्मल का हृदय आइसलैंड की कल्पनाओं में खोता है। उनके लिए आइसलैंड को सबसे बड़ी खासियत यहाँ के नागरिकों का बीयर और अपनी भाषा के प्रति लगाव है। उन्हें अपने देश के बंगाली मित्र याद आते हैं और उनकी भी अपनी भाषा के प्रति लगाव की बात निर्मल याद करते हैं, शायद निर्मल को भी अपनी भाषा और बीयर दोनों से लगाव था। बीयर-उनके लिए जैसे दुनियादारी अनुभव को तटस्थ, ऊँचाई से देखने में मददगार माध्यम थी। भाषाई शब्दों की खोज और बीयर का आस्वादन दोनों निर्मल भी बड़ी शिद्दत से करते थे। आइसलैंडी भाषा के उन्होंने दो शब्द सीखे-एक 'संबंध' और दूसरा 'स्काऊल'। संबंध हिन्दी का भी शब्द है और स्काऊल फिर पीने-पिलाने वाला 'चीयर्स' जैसा| गंभीरता और सहजता निर्मल की लेखनी के स्पष्ट गुण है। ’चीड़ों पर चाँदनी' में ब्रेख्त और 'एक उदास नगर' नामक अध्याय इसका जीवंत प्रमाण है। निर्मल अब आइसलैंड का रुख करते हैं तो उनके पास इस छोटे से देश के बारे में अनेक तथ्य जमा हो चुके हैं। फिलहाल वे बर्लिन से रुबरु हैं। विभाजित बर्लिन और उसकी याचना के साथ। यह विभाजन सांस्कृतिक, राजनीतिक दृष्टि से बड़ा साफ दिखाई देता है। पूर्वी बर्लिन में कम्यूनिस्ट सरकार है, उसका नारा हैं-’फासिज्म नेवर अगेन' जबकि पश्चिम बर्लिन नई भोग परक जीवन-शैली को दर्शाता है।

यहाँ अमरीकी सिगरेट, स्काच विहस्की, फ्रेंच कोन्याक, वात्स्यायन की पुस्तकों की प्रचुर उपलब्धता देखी जा सकती है। लेकिन निर्मल-इस विभाजन के बावजूद एक टिप्पणी करते हैं-" जहाँ तक इन चीजों के प्रति आकर्षण का प्रश्न है, मैंने पूर्वी और पश्चिमी बर्लिन के लोगों में कोई भेद नहीं देखा, उनके राजनीतिक सिद्धांत अथवा आध्यात्मिक मान्याताएँ एक-दूसरे से कितनी ही भिन्न क्यों न हो।" यह महत्वपूर्ण टिप्पणी है। यूरोप अपनी अध्यात्मिक,सांस्कृतिक,राजनीतिक मान्यताओं के विभाजन के बावजूद वस्तुवादी है। विभाजित पड़ोसियों में संश्लिष्ट संबंध होता है। जैसे भारत-पाक का है, कुछ वैसे ही संबंधों की चर्चा पश्चिम बर्लिन के गाइड के प्रसंग में आती है। पश्चिम बर्लिन का गाइड पूर्वी जर्मनी की खिल्ली उड़ाने में विशेष आनंद पाता है। शत्रुताओं की लोक अभिव्यक्ति इसे ही कहा जाना चाहिए। गाइड हिटलर की स्मृतियों को लेकर संजीदा हो जाता है। पश्चिमी और पूर्वी बर्लिन के नागरिकों का हिटलर के प्रति समान में भिन्नता देखी जा सकती है। कम्यूनिस्टों के प्रति दुराग्रह पश्चिमी बर्लिन के लोगों का एक खास मनोविज्ञान रहा है। निर्मल लिखते हैं कम्यूनिस्ट का विरोध तो स्वीकार्य है परन्तु यह फासिज्म का रुप ले ले इस कैसे स्वीकार किया जा सकता है। किस्टोकर ईशरहुड के युर पूर्व उपन्यास 'गुडबाइ टू बर्लिन' का हवाला देते हुए निर्मल बर्लिन की नब्ज टटोलते हुए उसके स्थायी चरित्र को उद्घाटित करते है- एक संजीदा और उदास शहर के रुप में।

विवेचन

निर्मल वर्मा के पास तीक्ष्ण पर्यवेक्षण दृष्टि है। वे मानवीय गतिविधियों पर ही अपनी नजर नहीं रखते अपितु उनकी जद में इमारतें, प्राकृतिक उपादान और सृष्टि की अनेक हलचलें भी सहज ही आ जाती हैं। वे अपनी यात्राओं में जड़-चेतन सभी से संवाद करते हैं। उनके दृश्य इतने प्रखर हैं कि वे सहसा अपने पूर्वजों को साक्षात प्रकट कर देते हैं। मामूली से चिन्ह भी एक नइ्र विचार-श्रृंखला के रूप में हमारे सामने उपस्थित हो जातें हैं। निर्मल की यात्रा बाहरी सतहों को भेदती है और काल के विस्तार में प्रसरित हो उठती है। नागरिकों, शहरों और परिवेश के मूड, मिजाज और मंतव्य को परखने-सूंघने की अनूठी शक्ति है निर्मल के पास। वे भाषा से भूदृश्य रचने की क्षमता रखते हैं। उनकी यात्रा एक जुलूस की शक्ल धारण कर लेती है, कार्निवाल की भाँति जिसमें अनेक उपक्रम एक साथ रचते चले जाते हैं। नाटककार अपना नाटक, संगीतकार अपने संगीत, दार्शनिक अपना दर्शन, साधु अपनी मस्ती, लेखक अपनी रचनाएँ, वादक अपने वाद्ययंत्र, चित्रकार अपने चित्र और नर्तक अपने नृत्य के साथ उपस्थित हो जाते हैं। प्रकृति और परिवेश इसके मूक साक्षी नहीं रहते वरन् वे भी मुखर हो उठते हैं। वेदना और उल्लास निर्मल के जीवन और यात्राओं में समानांतरता में उपस्थित हैं।

''चीड़ों पर चाँदनी' के अतिरिक्त उनके यात्रा-संस्मरणों में *'सुलगती टहनी'* अत्यंत रोचक और महत्वपूर्ण है। चीड़ों पर चाँदनी में जहाँ यूरोपीय जीवन की विभीषिका का उद्धाटन है, वहीं सुलगती टहनी भारतीय आस्था और फक्कड़पन को उद्भासित करती है। कहना चाहिए कि चीड़ों पर चाँदनी और सुलगती टहनी एक दूसरे की पूरक रचनाएँ बन जाती हैं। हालांकि उनकी कृति *'धुंध से उठती धुन'* में भी संस्मरणों की अनेक छवियाँ उभरी हैं और उनमें भी देसी ध्वनि विद्यमान है। उनके यात्रा-संस्मरण कौतूहल भले ही न उत्पन्न करें फिर उनकों पढ़कर हम एक स्थायी छवि अपने भीतर गढ़ पाते हैं।

निष्कर्ष

'ब्रेख्त और एक उदास नगर' निर्मल की कृति '*चीड़ों पर चाँदनी*' का पहला संस्मरण है। द्वितीय विश्वयुद्ध की छवियों को साकार करता यह संस्मरण अतीत को वर्तमान में उपस्थित कर देने की निर्मल की अनूठी रचनात्मक क्षमता का उत्कृष्ट उदाहरण है। जर्मनी के बर्लिन शहर के अनेक ध्वंसाअवशेषों को निहारते निर्मल इतिहास की वेदनाओं में खो से जाते हैं। अतीत के वे चिन्ह व्यतीत न होकर रचनाकार के द्वारा पुनर्जीवित कर दिए जाते हैं, इस प्रत्याशा के साथ कि उन घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो। कला और राजनीति के आपसी संबंधों के अंतर्वर्ती पाठ को भी इसमें तलाशा जा सकता है। इसे यात्रा-वृत्त कहा जाय या यात्रा-संस्मरण कहना कठिन है। वृतांत और संस्मरण की अनेक विशेषताएँ इसमें एकसाथ अनुस्यूत हैं। अपनी अनुपम भाषा सृष्टि और भास्वर बिंब निर्माण के चलते यह एक अत्यंत पठनीय रचना बन जाती है, जो मनुष्य के आर्तनाद और आनंद को एक साथ रुपायित कर देती है।

अभ्यास प्रश्न

1-यात्रा-संस्मरण की विशेषताएँ बताते हुए 'चीड़ों पर चाँदनी' का मूल्यांकन कीजिये।

2- 'ब्रेख्त और एक उदास नगर' के आधार पर निर्मल वर्मा की भाषा-शैली का विवेचन कीजिये।

3-यात्रा-वृतांत और संस्मरण के तत्वों का उल्लेख करें और उनके आपसी संबंध पर प्रकाश डालिये।

4-ब्रेख्त के योगदान का मूल्यांकन प्रस्तुत कीजिये।

5-बर्लिन शहर को रचनाकार ने एक उदास नगर की संज्ञा क्यों दी है?

6-लेखक ने आइसलैंड के नागरिकों की किन खूबियों की चर्चा की है?

7-लेखक ने किस चीनी कहावत से अपने संस्मरण की शुरुआत की है?

8-लैक्सनेस कौन थे? उनका आइसलैंड के जनजीवन पर कैसा असर पड़ा?

9-बर्लिन शहर की जीवंतता का वर्णन कीजिये।

10-थोर्गियर और निर्मल की दोस्ती पर अपने विचार व्यक्त कीजिये।

पहेली/प्रयोग

1-आपने किसी न किसी स्थान की यात्रा अवश्य की होगी। 'ब्रेख्त और एक उदास नगर' की तर्ज पर अपना यात्रा वृतांत लिखिये।

2-अपनी दादी या नानी से उनकी यात्राओं का विवरण सुनकर उसे अपने शब्दों में लिखिये।

3-आपने अपनी यात्रा के दौरान कुछ चित्र जरूर खींचे होंगे, उनपर अपने दोस्तों के साथ चर्चा कीजिये।

शब्दकोश

1-होस्पोदा(पृ०13): बीयर हाउस जो चेक जीवन की पॉपुलर संस्कृति का हिस्सा है।

पृ०23): Scuol is a municipality in the district of Inn in the Swiss canton of Graubünden. The official language in Scuol is Romansh.

2-टेवर्न(पृ०13): A **tavern** is a place of business where people gather to drink alcoholic beverages and, more than likely, also be served food. An inn is a tavern which has a license to put up guests. The word derives from the Latin *taberna* and the Greek *ταβέρνα*/taverna, whose original meaning was a shed or workshop. The distinction of a tavern from an inn, bar or pub varies by location, in some places being identical and in others being distinguished by traditions or by legal license. In 16th century England, a tavern was distinguished from a public ale house by dint of being run as a private enterprise, where drinkers were "guests" rather than members of the public.(Source: Wikipedia.org)

3-ताल्सतॉय(पृ०15): रूस के महान लेखक और विचारक । अन्ना करेनिना इनकी विश्व प्रसिद्ध कृति है।

4-वार एंड पीस(पृ०15): लियो ताल्सताय का प्रसिद्ध उपन्यास जिसका प्रभाव अनेक परवर्ती रचनाओं पर देखने को मिला।

5-एन्सेंबल(पृ०16): अभिनेताओं, नर्तकों, गायकों और संगीतकारों का समूह जो अपनी समवेत प्रस्तुतियाँ करता है।The **Berliner Ensemble** (German pronunciation: [bɛʁˈliːnɐ ãˈsãːbəl]) is a German theatre company established by playwright Bertolt Brecht and his wife, Helene Weigel in January 1949 in East Berlin. In the time after Brecht's exile, the company first worked at Wolfgang Langhoff's Deutsches Theater and in 1954 moved to the Theater am Schiffbauerdamm, built in 1892, that was open for the 1928 premiere of *The Threepenny Opera* (*Die Dreigroschenoper*).

6-ब्रेख्त(पृ०16): Bertolt Brecht (German pronunciation: [ˈbɛɐ̯tɔlt ˈbʁɛçt] (listen); born Eugen Berthold Friedrich Brecht (help·info); 10 February 1898 – 14 August 1956) was a German poet, playwright, and theatre director. An influential theatre practitioner of the 20th century, Brecht made equally significant contributions to dramaturgy and theatrical production, the latter particularly through the seismic impact of the tours undertaken by the Berliner Ensemble—the post-war theatre company operated by Brecht and his wife, long-time collaborator, and actress Helene Weigel.

7-नात्सी(पृ०18): The Nazis believed in the supremacy of an Aryan master race and claimed that Germans represent the most pure Aryan nation. They argued that Germany's survival as a modern great nation required it to create a New Order — an empire in Europe that would give the German nation the necessary land mass, resources, and expansion of population needed to be able to economically and militarily compete with other powers

8-कम्युनिस्ट(पृ०18): कार्ल मार्क्स के चिंतन और विचार पर आधारित विचारधारा को मानने वाला

9-समकालीन(पृ०20): 1) दो व्यक्तियों , घटनाओं का समान काल खण्ड **2)** नितांत वर्तमान समय

10-काफ्का(पृ०20): Franz Kafka (German pronunciation: [ˈfʁants ˈkafka]; 3 July 1883 – 3 June 1924) was a culturally influential German-language novelist. Contemporary critics and academics[*who?*] regard Kafka as one of the best writers of the 20th century. The term "Kafkaesque" has become part of the English vernacular.

11-स्काऊल(पृ०23): Scuol is a municipality in the district of Inn in the Swiss canton of Graubünden. The official language in Scuol is Romansh.

12-ब्लैकडेथ(पृ०24): एक प्रकार की वोदका **जो** यूरोप में पेय पदार्थ के रूप में अत्यंत लोकप्रिय है।

13-लैक्सनेस(पृ०24): Halldór Kiljan Laxness [ˈhaltour ˈcʰɪljan ˈlaxsnɛs] (listen) (born **Halldór Guðjónsson**) (April 23, 1902 – February 8, 1998) was a twentieth-century Icelandic novelist, poet, essayist, and the author of *Independent People*, *The Atom Station*, and *Iceland's Bell*. He won the Nobel Prize in Literature in 1955.

14-आइखमैन(पृ०26): Adolf Otto Eichmann[1][2] (March 19, 1906 – May 31, 1962[3]) was a German Nazi and *SS*-*Obersturmbannführer* (Lieutenant Colonel) and one of the major organizers of the Holocaust. Because of his organizational talents and ideological reliability, Eichmann was charged by *Obergruppenführer* (General) Reinhard Heydrich with the task of facilitating and managing the logistics of mass deportation of Jews to ghettos and extermination camps in German-occupied Eastern Europe.

15-गोयबल्स(पृ०27): Dr. Paul Joseph Goebbels (/ˈɡɜrbəlz/;[1] also spelled **Göbbels**; German: [ˈɡœbəls]; 29 October 1897 – 1 May 1945) was a German politician and Reich Minister of Propaganda in Nazi Germany from 1933 to 1945. As one of Adolf Hitler's closest associates and most devout followers, he was known for his zealous oratory and anti-Semitism. He played a hand in the Kristallnacht attack on the German Jews, which historians consider to be the beginning of the Final Solution, leading towards the genocide of the Holocaust.

16-क्रिस्टोफर ईशरहुड(पृ०28) Christopher William Bradshaw Isherwood (26 August 1904 – 4 January 1986) was an English-American novelistBorn at Wyberslegh Hall, High Lane, Cheshire in North West England, Isherwood spent his childhood in various towns where his father, a Lieutenant-Colonel in the British Army, was stationed.[*citation needed*] After his father was killed in the First World War, he settled with his mother (died 15 June 1960)[3] and his younger brother, Richard, in London and at Wyberslegh

सन्दर्भ

आधार-ग्रंथ

‘चीड़ों पर चाँदनी’, निर्मल वर्मा, राजकमल पेपरबैक्स, नयी दिल्ली,प्रथम संस्करण, 1988

सहायक-ग्रंथ

1- निर्मल वर्मा, कृष्ण दत्त पालीवाल, साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली

2-हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास-राम स्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती, इलाहाबाद

3-पूर्वग्रह-निर्मल वर्मा पर केंद्रित अंक

4-निर्मल वर्मा, अशोक वाजपेयी (सं०), राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली

5- हिंदी गद्य साहित्य-रामचंद्र तिवारी

वृत्तचित्र

निर्मल वर्मा-साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली

नेट-संदर्भ

- www.gadyakosh.org
- www.hi.wikipedia.com
- www.hindimedia.blogspot.com
- www.sahitya-akademi.org